

जीवन में पृथ्वी की तरह धैर्यवान बनें

पारुल
रुड़की

“धैर्य का अर्थ प्रतीक्षा नहीं है। यह अच्छी सोच और व्यवहार की वह क्षमता है, जो हार के बावजूद आपके सपनों को मरने नहीं देती। आपके विश्वास को बनाए रखती है।”

यह संसार है, यहां पर हर तरह की समस्याएं हैं, हर तरह की उलझनें हैं, दिक्कतें हैं, किन्तु हमें जीवन को एक उत्सव एवं त्योहार की तरह लेना चाहिए, जिसमें सबको कुछ न कुछ अवश्य मिलता है। पर जरूरी नहीं कि वही मिले जो हम चाहते हैं। **संतों ने कहा है कि—जिन्दगी में अधीर नहीं होना, धैर्यवान बनो।** यह वचन सीधा—सादा है, परन्तु इसमें पूरे जीवन का सार है। बारिश होती है, तो रूकती भी है। घाव रिसता है, तो भर भी जाता है। अधेरी रात है, तो उजालों भरी सुबह भी आएगी। ध्यान रखें, कुछ भी शाश्वत नहीं है, बस धैर्य का दामन ना छोड़ें। इसलिए यदि कुछ अच्छा हो रहा है, तो उसका आनंद लें, क्योंकि यह भी हमेशा नहीं रहेगा, यदि कुछ बुरा हो रहा है, तो चिंता न करें, क्योंकि यह समय भी बीत जायेगा। मुश्किल से मुश्किल समय में भी मुस्कराहट का दामन ना छोड़ें। हर पल कुछ नया देता है तो कुछ ले लेता है। सबको दूसरा मौका जरूर मिलता ही है बस उस मौके को धैर्य से तलाशें और अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करें।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी ‘रामचरितमानस’ में लिखा है—**धीरज, मित्र अरू नारी, आपतकाल परिखए चारी।** दुःखों से घबराना नहीं चाहिए। जैसे—शुद्ध सोने के लिए सोने को अग्नि में से होकर गुजरना पड़ता है। गुलाब के साथ कांटे भी रहते हैं, परन्तु कांटों को भी गिनते रहना बुद्धिमानी नहीं है। गुलाब के सौन्दर्य को और गुलाब की सुगन्ध को महसूस करो, फिर धीरे—धीरे कांटे भी फूल बन जाते हैं। दुःख किस पर नहीं आए ? **मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम** को क्या कम कष्ट उठाने पड़े। **‘भगवती माँ सीता जी’** को क्या—क्या नहीं झेलना पड़ा। **‘भगवान श्री कृष्ण’** के जीवन में भी बहुत कष्ट आए।

‘श्रीमद्भगवत गीता’ का यही संदेश है, कि मनुष्य के जीवन में सुख—दुःख, संयोग—वियोग, जन्म—मृत्यु, मान—अपमान सभी आते हैं। जीवन के ये अनिवार्य अंग हैं। तब ऐसे समय में हमें अपना जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिये ? जीवन में जैसी भी परिस्थितियाँ आयें, उन्हें बहादुर की तरह सहन करें, स्वीकार करें, स्वीकार में ही सुख है, आनन्द है। स्वीकार में ही सब कुछ है। धैर्य रख कर आगे बढ़ें, जल्दी मत करें। हम वास्तव में बहुत जल्दी निराश हो जाते हैं। ये दुःख के बादल भी छंट जायेंगे, और सुख का सूरज भी निकल जायेगा। ये विपत्तियों का अंधेरा दूर होगा और सुख—शान्ति का प्रकाश चारों ओर फैल जायेगा। सब दिन एक से नहीं रहते, सब कुछ परिवर्तनशील है, बदलता रहता है। जो भी हमारे जीवन में सुख—दुःख आते हैं, वे कुछ न कुछ हमें सिखाकर ही जाते हैं। जो इंसान इन अनुभवों से नहीं सीखता है। वह नासमझ है। संसार की सारी वस्तुएं टोकर लगने से टूटती हैं, पर एक मनुष्य ही ऐसा है, जो टोकर लगने से बनता है।

अनुकूल परिस्थिति हो या प्रतिकूल, सबमें धैर्य को बनाए रखना चाहिये। हमें विचार करना है, अपने जीवन के प्रति, दुःख है तो इसके भी कारण हम हैं, सुख है तो इसके कारण भी हम हैं। हमारे सुख—दुःख का कोई दूसरा कारण नहीं है। परमात्मा ने हमें विवेक दिया है, बुद्धि, बोध व विचार दिये हैं, अत्यन्त उत्कृष्ट मानव शरीर दिया है, शक्ति व बल दिया है बस हमें धैर्य से अपनी स्थिति को, अपने स्वरूप को समझना है। व्यवहार हो या परमार्थ, धैर्य तो चाहिये ही है। बिना धैर्य के न व्यवहार में सफलता मिलेगी, न परमार्थ में। धैर्य बहुत बड़ी साधना है। धर्म को पाना हो, सत्य को पाना हो या शान्ति को पाना हो, तो धैर्य ही चाहिए।

हमें प्रत्येक परिस्थिति का सामना धैर्यपूर्वक करना चाहिए। टूटना नहीं चाहिए, क्योंकि ईश्वर सदैव हमारे साथ है। यह जिन्दगी, एक बहुत ही अनमोल देन है, प्रभु की! इसको प्रसन्नता व धैर्य के साथ जीना चाहिये। अपनी सहनशक्ति को बढ़ाइये, फिर देखिये जिन्दगी कितनी खूबसूरत व आनन्द स्वरूप हो जाती है।